हिन्दी : XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

MODEL PAPER – 1

- **परीक्षार्थियों के लिये निर्देश :**
  1. परीक्षार्थी OMR उत्तर पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें।
  2. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
  3. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
  4. प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए परीक्षार्थियों को 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है।
  5. यह प्रश्न पुस्तिका दो खण्डों में है–**खण्ड-'अ'** एवं **खण्ड-'ब'**।
  6. खण्ड-'अ' में **100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न** हैं, जिनमें से किन्हीं **50 प्रश्नों** का उत्तर देना अनिवार्य है। 50 प्रश्नों से अधिक का उत्तर देने पर प्रथम 50 का ही मूल्यांकन होगा। प्रत्येक के लिए **1 अंक** निर्धारित है। इनका उत्तर देने के लिए उपलब्ध कराये गए OMR उत्तर-पत्रक में दिए गए सही विकल्प को नीले / काले बॉल पेन से प्रगाढ़ करें। किसी भी प्रकार के ह्वाइटनर / तरल पदार्थ / ब्लेड / नाखून आदि का OMR उत्तर पत्रक में प्रयोग करना मना है, अन्यथा परीक्षा परिणाम अमान्य होगा।
  7. खण्ड-ब में **6 विषयनिष्ठ प्रश्न** हैं। प्रत्येक प्रश्न के समक्ष अंक निर्धारित हैं।
  8. किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है।

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिये गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गए सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। $50 \times 1 = 50$

1. बालकृष्ण भट्ट का निधन कब हुआ था ?
   (A) 20.07.1914 ई॰ (B) 17.05.1910 ई॰
   (C) 13.04.1910 ई॰ (D) 18.06.1907 ई॰
2. 'ओ सदानीरा' शीर्षक निबंध किस पुस्तक से लिया गया है ?
   (A) कहते क्षण (B) बोलते क्षण (C) गाते क्षण (D) सुनते क्षण
3. मोहन राकेश रचित नाटक है
   (A) आषाढ़ का एक दिन (B) पहला राजा
   (C) सत्य हरिशचन्द्र (D) उत्तर प्रियदर्शी
4. 'प्रगीत और समाज' शीर्षक निबंध के निबंधकार हैं
   (A) चंद्रधर शर्मा गुलेरी (B) मलयज
   (C) बालकृष्ण भट्ट (D) नामवर सिंह
5. ओमप्रकाश बाल्मीकि की रचना है
   (A) शिक्षा (B) जूठन (C) तिरिछ (D) रोज
6. लेखक 'मलयज' का मूल नाम क्या था ?
   (A) शरत् जी श्रीवास्तव (B) गगन जी श्रीवास्तव
   (C) भरत जी श्रीवास्तव (D) जगन जी श्रीवास्तव
7. 'तिरिछ' कहानी है
   (A) आदर्शवादी (B) समन्वयवादी (C) मनोवैज्ञानिक (D) जादुई यथार्थ
8. 'जयप्रकाश नारायण' के गाँव का क्या नाम था ?
   (A) सिताव दियारा (B) सिमरिया
   (C) शाहजहाँपुर (D) कुशीनगर
9. रघुवीर सहाय का जन्म कब हुआ था ?
   (A) 9 दिसम्बर, 1929 ई॰ में (B) 8 दिसम्बर, 1928 ई॰ में
   (C) 7 दिसम्बर, 1929 ई॰ में (D) 5 दिसम्बर, 1930 ई॰ में
10. 'भक्तमाल' क्या है ?
    (A) माला (B) भक्त चरित्रों की माला
    (C) क्रांतिकारी (D) देशभक्त
11. नाभादास का स्थायी निवास कहाँ था ?
    (A) देहरादून (B) मथूरा (C) वृंदावन (D) शिमला
12. तुलसीदास का जन्म-स्थान कहाँ था ?
    (A) राजापुर बाँदा (B) राजपुर बाँद्रा (C) रायपुर बिंदा (D) रूपपुर बूँदा
13. 'पार्वती मंगल' किस कवि की रचना है ?
    (A) सूरदास (B) तुलसीदास (C) जायसी (D) भूषण
14. 'सूरदास' किस शाखा के कवि थे ?
    (A) रामभक्ति शाखा (B) कृष्णभक्ति शाखा
    (C) वैष्णवभक्ति शाखा (D) शैवभक्ति शाखा
15. 'पद्मावत्' किसकी रचना है ?
    (A) मलिक मुहम्मद जायसी (B) सूरदास
    (C) तुलसीदास (D) नाभादास
16. तुलसीदास का व्यक्तित्व कैसा था ?
    (A) मृदुभाषी (B) विनम्र
    (C) शांत (D) उपर्युक्त सभी
17. सूरदास की अभिरुचि किस काम में थी ?
    (A) पर्यटन (B) सत्संग
    (C) कृष्णभक्ति एवं वैराग्य (D) उपर्युक्त सभी
18. जयशंकर प्रसाद के काव्य-संकलन का नाम लिखें
    (A) झरना (B) लहर
    (C) आँसू (D) उपर्युक्त सभी
19. 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता के रचयिता कौन हैं ?
    (A) गजानन माधव मुक्तिबोध (B) रघुवीर सहाय
    (C) शमशेर बहादुर सिंह (D) अशोक बाजपेयी
20. 'अधिनायक' शीर्षक कविता के रचयिता हैं
    (A) अशोक वाजपेयी (B) ज्ञानेन्द्रिपति
    (C) रघुवीर सहाय (D) विनोद कुमार शुक्ल

21. जे॰ कृष्णमूर्ति क्या करते थे ?
(A) लिखते थे (B) बोलते थे
(C) बोलते और लिखते थे (D) गाते थे

22. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' किस विधा की रचना है ?
(A) डायरी साहित्य (B) कहानी साहित्य
(C) यात्रा साहित्य (D) गद्य साहित्य

23. 'कुरड़ियों' शब्द का अर्थ बताएँ
(A) गायिकाएँ (B) नर्तकी
(C) नर्तकियाँ (D) कूड़ा फेंकने की जगह

24. मोहन राकेश के बचपन का क्या नाम था ?
(A) रामकृष्ण गुगलानी (B) राधाकृष्ण गुगलानी
(C) मदन मोहन गुगलानी (D) मदन मोहन मुगलानी

25. 'धाँगड़' शब्द का अर्थ ओराँव भाषा में क्या है ?
(A) भाड़े का मजदूर (B) मिट्टी ढ़ोने वाला मजदूर
(C) लकड़ी ढ़ोने वाला मजदूर (D) मजदूर

26. बातचीत से मन किस प्रकार का हो जाता है ?
(A) भारी और बोझिल (B) हल्का और स्वच्छ
(C) मैला-कुचैला (D) क्रोधपूर्ण

27. 'उसने कहा था' कहानी कितने भागों में बँटी हुई है ?
(A) तीन भागों में (B) चार भागों में
(C) पाँच भागों में (D) सात भागों में

28. लेखक मद्रास में अपने किस मित्र के साथ रुका था ?
(A) ईश्वर अय्यर (B) भगवान अय्यर
(C) गंगा बाबू (D) दिनकर

29. दिनकरजी की पहली काव्य पुस्तक का नाम बताइए
(A) रेणुका (B) कुरुक्षेत्र
(C) प्रणभंग (D) कोमलता और कवित्व

30. मालती के पति किस बीमारी का ऑपरेशन करके आए थे ?
(A) गैंग्रीन (B) कैंसर
(C) पथरी (D) इनमें से कोई नहीं

31. भगत सिंह के आदर्श पुरुष कौन थे ?
(A) स्वर्ण सिंह (B) अजीत सिंह
(C) करतार सिंह सराबा (D) गणेश शंकर विद्यार्थी

32. गाँधीजी चम्पारण किस सन् में आए थे ?
(A) सन् 1915 (B) सन् 1917 (C) सन् 1918 (D) सन् 1919

33. मानक किस युद्ध में सिपाही बनकर लड़ने गया था ?
(A) प्रथम विश्वयुद्ध में (B) द्वितीय विश्वयुद्ध में
(C) कारगिल युद्ध में (D) इनमें से कोई नहीं

34. कविता का इतिहास मुख्यतः कैसा काव्य है ?
(A) प्रबंध काव्य (B) गीति काव्य
(C) प्रगीत मुक्तक (D) इनमें से कोई नहीं

35. रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना है
(A) अर्द्धनारीश्वर (B) रोज (C) संदानीरा (D) जूठन

36. लेखक के विरुद्ध कौन साजिश कर रहा है ?
(A) अग्नि (B) पानी (C) धरती (D) हवा

37. उदय प्रकाश ने किस पत्रिका के संपादन विभाग में काम किया ?
(A) दिनमान (B) प्रदीप (C) इंडिया टुडे (D) गीतिका

38. लेखक के अनुसार संपूर्ण विश्व किस ओर अग्रसर हो रहा है ?
(A) नाश की ओर (B) विकास की ओर
(C) प्रतिस्पर्द्धा की ओर (D) इनमें से कोई नहीं

39. जायसी का जन्म 1492 ई॰ में किस गाँव में हुआ ?
(A) अमेठी में (B) जायस नामक गाँव में
(C) मध्य प्रदेश के एक गाँव में (D) गुजरात के एक गाँव में

40. प्रस्तुत प्रथम पद में कृष्णा को किसकी सूचना दी जा रही है ?
(A) दोपहर होने की (B) रात्रि होने की
(C) भोर होने की (D) किसी की भी नहीं

41. दूसरे पद में भीख माँगते भिखारी के रूप में किसका परिचय दिया गया है ?
(A) तुलसीदास का (B) भगवान श्रीराम का
(C) सीताजी का (D) लक्ष्मण का

42. छप्पय कितनी पंक्तियों का छंद होता है ?
(A) चार (B) पाँच (C) छः (D) सात

43. कवित्त रस के द्वितीय पद में किस रस की अभिव्यंजना हुई है ?
(A) शृंगार रस की (B) करुण रस की
(C) वीभत्स रस की (D) वीर रस की

44. 'तुमुल कोलाहल कलह में' प्रसाद की किस रचना से ली गयी है ?
(A) कामायनी (B) झरना (C) आँसू (D) चित्राधार

45. कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
(A) 4 अगस्त, 1904, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
(B) 16 अगस्त, 1905, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
(C) 16 अक्टूबर, 1904, फर्रूखाबाद, उत्तर प्रदेश
(D) 16 अक्टूबर, 1924, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

46. प्रातःकाल का नभ कैसा था ?
(A) धुँधला (B) नीले राख के समान
(C) लाल कमल के समान (D) इनमें से कोई नहीं

47. मुक्तिबोध ने कब से दिग्विजय महाविद्यालय में प्राध्यापक पद पर काम करना शुरू किया ?
(A) सन् 1957 से (B) सन् 1956 से
(C) सन् 1960 से (D) सन् 1958 से

48. रघुवीर सहाय ने किस विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर (एम॰ ए॰) किया ?
(A) आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
(B) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
(C) कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर
(D) लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

49. निम्नलिखित में से कौन-सा पुरस्कार/सम्मान विनोद कुमार शुक्ल को नहीं प्रदान किया गया है ?
(A) रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार (B) पहल सम्मान
(C) साहित्य अकादमी पुरस्कार (D) दयानंद मोदी कवि शेखर सम्मान

50. हार-जीत कविता में किसका प्रश्न उठाया गया है ?
(A) हार का (B) जीत का
(C) हार और जीत का (D) इनमें से कोई नहीं

51. निम्नलिखित में कौन-सी रचना ज्ञानेन्द्रपति की नहीं है ?
(A) गंगा तट (B) एक पतंग अनंत में
(C) आँख हाथ बनते हुए
(D) शब्द लिखने के लिए ही यह कागज बना है

52. 'उद्भव' का संधि-विच्छेद है
(A) उत् + भव (B) उत + अभव
(C) उद् + अभव (D) उद् + भव

53. 'अत्यंत' का विशेषण है
(A) अत्यंतिक (B) अत्यांतिक (C) अत्योत (D) अंत्य

54. 'परिक्रम' में कौन-सा उपसर्ग है ?
(A) परी (B) पर (C) प (D) परि

55. 'खिलौना' में कौन-सा प्रत्यय है ?
(A) औना (B) ओना (C) ना (D) अना

56. 'घनश्याम' कौन-सा समास है ?
(A) कर्मधारय (B) द्विगु (C) द्वंद्व (D) तत्पुरुष

57. 'आकाश' का पर्यायवाची शब्द है
(A) अनल (B) पाताल (C) अंबर (D) अज्ञेय

58. 'नर' का विपरीतार्थक शब्द है
(A) पुरुष (B) व्यक्ति (C) धनी (D) नारी

59. जिस नारी की बोली कठोर हो
(A) कलजुगहीनार (B) दुष्टा (C) कर्कशा (D) भ्रष्टाचारिणी

60. 'घी के दीये जलाना' मुहावरे का अर्थ है
(A) रोशनी करना (B) मन चंचल होना
(C) आनन्द मनाना (D) दिवाली मनाना

61. 'ऋग्वेद' का संधि-विच्छेद है
(A) ऋक + वेद (B) ऋक + उदवेग
(C) ऋक् + वेद (D) ऋक + द

62. 'उनतीस' में कौन-सा उपसर्ग है ?
(A) उ (B) अन (C) उन (D) अ

63. 'चटनी' में कौन-सा प्रत्यय है ?
(A) नी (B) ना (C) अनी (D) अना

64. 'चौराहा' कौन-सा समास है ?
(A) द्वंद्व (B) द्विगु (C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

65. 'कमल' का पर्यायवाची शब्द है
(A) कोमल (B) रात्रि (C) फूल (D) अंबुज

66. 'शयन' का संधि-विच्छेद होगा
(A) श + यन (B) शय + न (C) शे + अन (D) शो + यन

67. 'हिमालय' शब्द संज्ञा है
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) भाववाचक (D) समूहवाचक

68. 'अहंकार' शब्द का संधि-विच्छेद होगा
(A) अहं + कार (B) अहम् + कार
(C) अहंका + र (D) अहंग + कार

69. 'भाषा' शब्द का लिंग निर्णय करें
(A) स्त्रीलिंग (B) पुल्लिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

70. 'अग्रज' शब्द का विलोम होगा
(A) अनु (B) अनुज (C) छोटा (D) पीछे

71. 'अग्नि' शब्द का पर्यायवाची होगा
(A) अनल (B) अंबक (C) अब्ज (D) आगार

72. 'भार' शब्द का प्रत्यय है
(A) आ (B) अ (C) र (D) अ्

73. 'जिसका आशय महान हो' के लिए एक शब्द है
(A) महामानव (B) महानाशय (C) सुआशय (D) महाशय

74. 'ओज' शब्द का विशेषण है
(A) ओजस्वी (B) ओजस (C) ओजत (D) ओजयुक्त

75. 'प्रतिकूल' में कौन-सा उपसर्ग है
(A) परि (B) प्रति (C) प्र (D) परा

76. 'सर्वनाम' के कितने प्रकार हैं ?
(A) चार (B) पाँच (C) छः (D) सात

77. 'तेल' शब्द है
(A) भाववाचक संज्ञा (B) द्रव्यवाचक संज्ञा
(C) समूहवाचक संज्ञा (D) जातिवाचक संज्ञा

78. 'पापमुक्त' समास है
(A) बहुब्रीहि (B) तत्पुरुष (C) अव्ययीभाव (D) कर्मधारय

79. 'पृथ्वी' शब्द का पर्यायवाची है
(A) गिरि (B) अचल (C) भूधर (D) भू

80. 'अनुदार' कौन-सा समास है ?
(A) कर्मधारय (B) नञ् (C) तत्पुरुष (D) बहुब्रीहि

81. 'संगठन' शब्द का संधि-विच्छेद है
(A) सम् + गठन (B) सं + गठन (C) संग + ठन (D) संगठ + न

82. 'निदान' शब्द में उपसर्ग है
(A) निंदा (B) निद (C) निद् (D) नि

83. 'लड़ाई' शब्द में प्रत्यय है
(A) ई (B) अई (C) आई (D) वाई

84. 'बेफायदा' शब्द कौन समास है ?
(A) कर्मधारय (B) तत्पुरुष (C) अव्ययीभाव (D) द्वन्द्व

85. 'प्रार्थना' शब्द का लिंग-निर्णय करें
(A) स्त्रीलिंग (B) पुल्लिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

86. 'घर' शब्द का संज्ञा है
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) भाववाचक (D) समूहवाचक

87. 'लघुता' शब्द में प्रत्यय है
(A) आ (B) ता (C) अ (D) घुता

88. 'पिता' शब्द का विशेषण होगा
(A) पितृ (B) पैत्री (C) पैतृक (D) पितृक

89. संख्यावाचक विशेषण है
(A) कोई (B) कुछ (C) थोड़ा (D) बीस

90. 'जिसके शिखर पर चन्द्र हो' के लिए एक शब्द है
(A) शेखर (B) चन्द्र (C) चन्द्रशेखर (D) चन्द्रशेख

91. 'लघु' शब्द का विशेषण है
(A) लघ (B) लघो (C) लाघव (D) लघव

92. 'जिसके हृदय में ममता नहीं है' के लिए एक शब्द है
(A) निर्मम (B) निर्दय (C) निर्धन (D) निर्भय

93. 'लम्बोदर' शब्द कौन समास है ?
(A) कर्मधारय (B) बहुब्रीहि (C) तत्पुरुष (D) द्विगु

94. 'सोमवार' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) व्यक्तिवाचक (C) भाववाचक (D) समूहवाचक

95. 'जो स्त्री अभिनय करे' का एक शब्द है
(A) नेत्री (B) अभिनेत्री (C) अभिनेता (D) अभिनायक

96. 'मनोयोग' का संधि-विच्छेद होगा
(A) मन + अयोग (B) मनो + योग
(C) मन + योग (D) मनः + योग

97. 'दाँत दिखाना' मुहावरे का अर्थ है
(A) बहस छिड़ जाना (B) खींस काढ़ना
(C) हँसना (D) रोना

98. 'लेन-देन' कौन समास है ?
(A) द्विगु (B) कर्मधारय (C) द्वन्द्व (D) बहुब्रीहि

99. 'छठी का दूध याद आना' मुहावरे का अर्थ है
(A) बुरा हाल होना (B) पराजित होना
(C) बचपन को याद करना (D) दूध पीना

100. 'नाखून' शब्द का लिंग-निर्णय करें
(A) स्त्रीलिंग (B) पुल्लिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबंध लिखिए : $1 \times 8 = 8$
(i) बेकारी की समस्या (ii) समाचार-पत्र
(iii) प्रदूषण (iv) दीपावली
(v) प्राकृतिक संसाधन (vi) वसंत ऋतु

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करें : $2 \times 4 = 8$

(i) जिस पुरुष में नारीत्व नहीं, अपूर्ण है।

(ii) हम तो केवल अपने समय की आवश्यकता की उपज हैं।

(iii) कौन-कौन है जन-गण-मन-
अधिनायक वह महाबली
डरा हुआ मन बेमन जिसका
बाजा रोज बजाता है।

(iv) जागिए, ब्रजराज कुँवर, कँवल-कुसुम फूले।
कुमुद वृंद संकुचित भए, भृंग लता भूले।

3. प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए अपने प्रधानाचार्य को एक आवेदन-पत्र लिखें। $1 \times 5 = 5$

अथवा,

परीक्षा की तैयारी के बारे में बतलाते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखें।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दें : $2 \times 5 = 10$

(i) जीवन क्या है ? इसका परिचय लेखक ने किस रूप में दिया है ?
(ii) दलविहीन लोकतंत्र और साम्यवाद में कैसा संबंध है ?
(iii) रामधारी सिंह दिनकर का निधन कहाँ और किन परिस्थितियों में हुआ ?
(iv) मालती के घर का वातावरण आपको कैसा लगा ? अपने शब्दों में लिखें।
(v) चम्पारण क्षेत्र में बाढ़ की प्रचंडता बढ़ने के क्या कारण हैं ?
(vi) छत्रसाल की तलवार कैसी है ?
(vii) बंधी हुई मुट्ठियों का क्या लक्ष्य है ?
(viii) शिवाजी की तुलना भूषण ने मृगराज से क्यों की है ?
(ix) कबीर ने भक्ति को कितना महत्व दिया है
(x) 'कबहुँक अंब अवसर पाई।' यहाँ अब सम्बोधन किसके लिए है ?

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर दें : $3 \times 5 = 15$

(i) डायरी क्या है ? लेखक के अनुसार सुरक्षा कहाँ है ?
(ii) गाँधीजी के शिक्षा संबंधी आदर्श क्या थे ?
(iii) पुंडलीक जी कौन थे ? उनके बारे में लिखें।
(iv) हृदय की बात का क्या अर्थ है ?
(v) भूषण रीतिकाल के किस धारा के कवि हैं, वे अन्य रीतिकालीन कवियों से कैसे विशिष्ट हैं ?
(vi) कवि की स्मृति में घर की चौखट इतना जीवित क्यों है ?

6. उपर्युक्त शीर्षक देकर निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण करें : $1 \times 4 = 4$

(i) ईश्वर को न तो मानव के प्रयासों की अपेक्षा है और न मानव से अपने अनुग्रहों का प्रतिदान ही चाहता है। वह स्वयं राजाधिराज हैं। उसके संकेत मात्र से उसके असंख्य गण पृथ्वी, आकाश और सागर छान डालते हैं। उनके समक्ष क्षुद्र मानव के प्रयासों का कोई मूल्य नहीं। जो मनुष्य उसके निर्धारित पथ पर प्रसन्नतापूर्वक चलता है, वही ईश्वर का सच्चा सेवक है। जिसे ईश्वर में अविचल श्रद्धा है, सांसारिक दृष्टि से कोई काम न करने पर भी उसकी गणना ईश्वर के सेवकों में होती है, उसका जीवन निरर्थक नहीं होता।

(ii) वर्तमान युग में जिस भीषणता के साथ जीवन-संघर्ष चल रहा है उसमें वह व्यक्ति कभी भी विजयी नहीं हो सकता, जो चुपचाप बैठकर अति दीर्घकाल तक सोंचता-विचारता रहेगा। यहाँ तो वही टिक सकता है, जिसमें काफी स्फूर्ति है, जो दूसरों को ढ़केलकर आगे बढ़ सकता है। नहीं तो जो उससे ताकतवर है उसे किनारे ढ़केल देगा और आप आगे बढ़ जायेगा। अगर तुम इस जीवन में कुछ करना चाहते हो, अगर तुम्हें अपना जीवन सफल बनाना है, तो तुम्हें प्रत्युत्पन्नमति होना चाहिए। जिस व्यक्ति में ये गुण पाए जाते हैं, उसमें अन्य गुणों का समावेश भी रहता है।

उत्तर

खण्ड–अ (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

1. (A)	2. (B)	3. (A)	4. (D)	5. (B)	6. (C)
7. (D)	8. (A)	9. (A)	10. (B)	11. (C)	12. (A)
13. (B)	14. (B)	15. (A)	16. (D)	17. (D)	18. (D)
19. (A)	20. (C)	21. (C)	22. (A)	23. (D)	24. (C)
25. (A)	26. (B)	27. (C)	28. (A)	29. (C)	30. (A)
31. (C)	32. (B)	33. (B)	34. (C)	35. (A)	36. (D)
37. (A)	38. (A)	39. (B)	40. (C)	41. (A)	42. (C)
43. (C)	44. (A)	45. (B)	46. (B)	47. (D)	48. (D)
49. (B)	50. (C)	51. (B)	52. (A)	53. (A)	54. (D)
55. (A)	56. (A)	57. (C)	58. (D)	59. (C)	60. (C)
61. (D)	62. (C)	63. (A)	64. (B)	65. (D)	66. (C)
67. (B)	68. (B)	69. (A)	70. (B)	71. (A)	72. (B)
73. (D)	74. (A)	75. (B)	76. (C)	77. (B)	78. (B)
79. (D)	80. (C)	81. (A)	82. (D)	83. (C)	84. (C)
85. (A)	86. (A)	87. (B)	88. (C)	89. (D)	90. (C)
91. (C)	92. (A)	93. (B)	94. (B)	95. (B)	96. (D)
97. (A)	98. (C)	99. (A)	100. (B)		

खण्ड–ब (विषयनिष्ठ प्रश्न)

1. **(i) बेकारी की समस्या**

भूमिका–आज भारत के सामने अनेक समस्याएँ चट्टान बनकर प्रगति का रास्ता रोके खड़ी हैं। उनमें से एक प्रमुख समस्या है-बेरोजगारी। महात्मा गाँधी ने इसे 'समस्याओं की समस्या' कहा था।

अर्थ–बेरोजगारी का अर्थ है-योग्यता के अनुसार काम का न होना। भारत में मुख्यतया तीन प्रकार के बेरोजगार हैं। एक वे, जिनके पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे पूरी तरह खाली हैं। दूसरे, जिनके पास कुछ समय काम होता है, परंतु मौसम या काम का समय समाप्त होते ही वे बेकार हो जाते हैं। ये आंशिक बेरोजगार कहलाते हैं। तीसरे वे, जिन्हें योग्यता के अनुसार काम नही मिलता।

कारण–बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण है–जनसंख्या विस्फोट। इस देश में रोजगार देने की जितनी योजनाएँ बनती हैं, वे सब अत्यधिक जनसंख्या बढ़ने के कारण बेकार हो जाती हैं। एक अनार सौ बीमार वाली कहावत यहाँ पूरी तरह चरितार्थ होती है। बेरोजगारी का दूसरा कारण है-युवकों में बाबूगिरी की होड़। नवयुवक हाथ का काम करने में अपना अपमान समझते हैं। विशेषकर पढ़े-लिखे युवक दफ्तरी जिंदगी पसंद करते हैं। इस कारण वे रोजगार-कार्यालय की धूल फाँकते रहते हैं।

बेकारी का तीसरा बड़ा कारण है-दूषित शिक्षा-प्रणाली। हमारी शिक्षा-प्रणाली नित नए बेरोज़गार पैदा करती जा रही है। व्यावसायिक प्रशिक्षण का हमारी शिक्षा में अभाव है। चौथा कारण है-गलत योजनाएँ। सरकार को चाहिए कि वह लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे। मशीनीकरण को उस सीमा तक बढ़ाया जाना चाहिए जिससे कि रोजगार के अवसर कम न हों। इसीलिए गाँधी जी ने मशीनों का विरोध किया था, क्योंकि एक मशीन कई कारीगरों के हाथों को बेकार बना डालती है।

दुष्परिणाम–बेरोजगारी के दुष्परिणाम अतीव भयंकर हैं। खाली दिमाग शैतान का घर। बेरोजगार युवक कुछ भी गलत-सलत करने पर उतारू हो जाते हैं। वही शांति को भंग करने में सबसे आगे होते हैं। शिक्षा का माहौल भी वही बिगाड़ते हैं जिन्हें अपना भविष्य अंधकारमय लगता है।

समाधान–बेकारी का समाधान तभी हो सकता है, जब जनसंख्या पर रोक लगाई जाए। युवक हाथ का काम करें। सरकार लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे। शिक्षा व्यवसाय से जुड़े तथा रोजगार के अधिकाधिक अवसर जुटाए जाएँ।

(ii) समाचार-पत्र

भूमिका–समाचार-पत्र वह कड़ी है जो हमें शेष दुनिया से जोड़ती है। जब हम समाचार-पत्र में देश-विदेश की खबरें पढ़ते हैं तो हम पूरे विश्व के अंग बन जाते हैं। उससे हमारे हृदय का विस्तार होता है।

लोकतंत्र का प्रहरी–समाचार-पत्र लोकतंत्र का सच्चा पहरेदार है। उसी के माध्यम से लोग अपनी इच्छा विरोध और आलोचना प्रकट करते हैं। यही कारण है कि राजनीतिज्ञ समाचार-पत्रों से बहुत डरते हैं। नेपोलयन ने कहा था–"मैं लाखों विरोधियों की अपेक्षा समाचार-पत्रों से अधिक भयभीत रहता हूँ।" समाचार-पत्र जनमत तैयार करते हैं। उनमें युग का बहाव बदलने की ताकत होती है। राजनेताओं को अपने अच्छे-बुरे कार्यों का पता इन्हीं से चलता है।

प्रचार का उत्तम माध्यम–आज प्रचार का युग है। यदि आप अपने माल को, अपने विचार को अपने कार्यक्रम को या अपनी रचना को देशव्यापी बनाना चाहते हैं तो समाचार-पत्र का सहारा लें। उससे आपकी बात शीघ्र सारे देश में

फैल जायगी। समाचार-पत्र के माध्यम से रातों-रात लोग नेता बन जाते हैं या चर्चित व्यक्ति बन जाते हैं। यदि किसी घटना को अखबार की मोटी सुर्खियों में स्थान मिल जाय तो वह घटना सारे देश का ध्यान अपनी ओर खींच लेती है। देश के लिए न जाने कितने नवयुवकों ने बलिदान दिया, परन्तु जिस घटना को पत्रों में स्थान मिला, वे घटनाएँ अमर हो गई।

व्यापार में लाभ–समाचार-पत्र व्यापार को बढ़ाने में परम सहायक सिद्ध हुए हैं। विज्ञापन की सहायता से व्यापारियों का माल देश में ही नहीं विदेशों में भी बिकने लगता है। रोजगार पाने के लिए भी अखबार उत्तम साधन है। हर बेरोजगार का सहारा अखबार में निकले नौकरी के विज्ञापन होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर-सरकारी फर्में अपने लिए कर्मचारी ढूँढ़ने के लिए अखबारों का सहारा लेती हैं। व्यापारी नित्य के भाव देखने के लिए तथा शेयरों का मूल्य जानने के लिए अखबार का मुँह जोहते हैं।

जे॰ पार्टन का कहना है–'समाचार-पत्र जनता के लिए विश्वविद्यालय है।' उनसे हमें केवल देश-विदेश की गतिविधियों की जानकारी ही नहीं मिलती, अपितु महान विचारकों के विचार पढ़ने को मिलते हैं। उनसे विभिन्न त्योहारों और महापुरुषों का महत्व पता चलता है। महिलाओं को घर-गृहस्थी सम्हालने के नए-नए नुस्खे पता चलते हैं। प्रायः अखबार में ऐसे कई स्थाई स्तम्भ होते हैं जो हमें विभिन्न जानकारियाँ देते हैं।

आजकल अखबार मनोरंजन के क्षेत्र में भी आगे बढ़ चले हैं। उनमें नई-नई कहानियाँ, किस्से, कविताएँ तथा अन्य बालोपयोगी साहित्य छपता है। दरअसल, आजकल समाचार-पत्र बहुमुखी हो गया है। उसके द्वारा चलचित्र खेलकूद, दूरदर्शन, भविष्य-कथन, मौसम आदि की अनेक जानकारियाँ मिलती हैं।

समाचार-पत्र के माध्यम से आप मनचाहे वर-वधू ढूँढ़ सकते हैं। अपना मकान, गाड़ी, वाहन खरीद-बेच सकते हैं। खोए गए बन्धु को बुला सकते हैं। अपना परीक्षा-परिणाम जान सकते हैं। इस प्रकार समाचार-पत्रों का महत्त्व बहुत अधिक हो गया है।

(iii) प्रदूषण

मानव के बौद्धिक विकास और सुव्यवस्थित जीवन के लिए संतुलित वातावरण का होना नितान्त आवश्यक माना गया है। संतुलित वातावरण में प्रत्येक घटक एक निश्चित अनुपालन में कार्य करता है। वातावरण में किसी घटक की अधिकता या अल्पता प्राणियों के लिए हानिकारक है। इसे ही प्रदूषण कहा गया है। प्रदूषण हवा, जल एवं स्थल की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक विशेषताओं का वह अवांछनीय परिवर्तन है, जो मनुष्य एवं उसके सहायक तथा लाभदायक अन्य जन्तुओं, पौधों, औद्योगिक संस्थानों आदि को विशेष रूप से क्षति पहुँचाता है।

जहाँ भी मानव ने प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन कर वातावरण में किसी तरह का परिवर्तन जाने या अनजाने लाने का प्रयास किया है, वहाँ पर्यावरण दूषित हुआ है। विस्तृत अर्थ में दूषित हो रही हवा, पानी, मिट्टी, मरुभूमि, दलदल, नदियों का उफनकर बहना और गर्मी में सूख जाना, जंगलों को काटने से लेकर पेयजल का संकट, गन्दे पानी का उचित रूप से निकास न होना आदि पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं।

ज्ञान-विज्ञान का विकास और जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ स्वच्छता की समस्या जटिल हुई है। बड़े-बड़े नगरों में नालियों के गन्दे पानी, मल-मूत्र, कारखानों की राख, रासायनिक गैसें अधिक मात्रा में निकलती हैं, फलतः हवा-जल और पृथ्वी स्थित सभी जीव-जन्तु प्रदूषण से प्रभावित होते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि विश्व के सभी देश अपने कोयला भंडारों का दोहन करेंगे तो जलवायु में एक अद्‌भुत नाटकीय परिवर्तन होगा। वातावरण में कोर्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हो जायेगी जिसका खाद्यान्न उत्पादन और प्राणी-सृष्टि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। जलवायु अधिक नमीयुक्त, उष्ण और मेघाच्छन्न हो जायेगी। कार्बन डाइऑक्साइड के कारण तापमान में लगभग दो सेन्टीग्रेड की वृद्धि होगी, जो भूमि को कृषि के लिए अनुपयुक्त बना देगी अर्थात्, सारी भूमि ऊसर बन जायेगी।

प्रदूषण के निम्नलिखित प्रकार हैं–(क)पर्यावरण प्रदूषण (ख) जल प्रदूषण (ग) स्थलीय प्रदूषण (घ) रेडियोधर्मी प्रदूषण (ङ) ध्वनि प्रदूषण।

पर्यावरण प्रदूषण–पर्यावरण को प्रदूषित करने में मोटर-वाहनों की भूमिका सर्वाधिक है। ये नगरों के वातावरण को दूषित कर रहे हैं। मोटर वाहनों से निकलनेवाला धुआँ विषैला होता है। यह विषैला धुआँ पर्यावरण को प्रदूषित करता है। एक सामान्य व्यक्ति को दिनभर में साँस लेने के लिए 14000 लीटर शुद्ध ऑक्सीजन की जरूरत है और 1000 किमी॰ चलने के लिए मोटरकार को भी उतनी ही ऑक्सीजन की जरूरत होती है। अतः वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि प्रदूषण के कारण पृथ्वी का वायुमण्डल गर्म होता जा रहा है और यदि गर्मी 3.5 सेन्टीग्रेड से अधिक तक पहुँच गयी तो उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों की बर्फ पिघलने लगेगी और सारी पृथ्वी जलमग्न हो जाएगी।

इसके अलावा बड़े-बड़े नगरों में कारखानों की बड़ी-बडी चिमनियाँ काला एवं भयंकर धुआँ उगलती रहती हैं जो प्राणियों के लिए एक भयानक संकट उत्पन्न कर रही हैं।

जल प्रदूषण–औद्योगिक नगरों में बड़े पैमाने पर दूषित पदार्थ नदियों में प्रवाहित किये जा रहे हैं, जिससे उसका पानी इस योग्य नहीं रह गया है कि उसका उपयोग किया जा सके। इससे जलीय जन्तुओं पर भी खतरा उत्पन्न हो रहा है। पानी को कीटाणुरहित बनाने के लिए रसायनों का पग्रोग किया जाता है, जिसमें डी॰ डी॰ टी॰ प्रमुख हैं, लेकिन डी॰ डी॰ टी॰ का प्रयोग कितना हानिप्रद प्रमाणित हुआ है कि इसके उत्पादन पर भी अब रोक लगाने की बात की जाने लगी है।

स्थलीय प्रदूषण–जनसंख्या की लगातार वृद्धि के फलस्वरूप खाद्य पदार्थ की माँग में अत्यधिक वृद्धि हुई है। पौधों की चूहों, कीटाणुओं तथा परजीवी कीड़ों से रक्षा के लिए रासायनिक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। इनमें से अधिकांश पदार्थ मिट्टी में मिलकर भूमि को दूषित करते हैं और भूमि की उत्पादन क्षमता में कमी लाते हवा में विसर्जित प्रदूषण तत्त्व सोखने वाले और अवांछनीय ध्वनि का शोषण करके शोर की तीव्रता को कम करनेवाले वृक्षों के उन्मूलन किये जाने से हमारे स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव पड़ रहा है। इस प्रकार, वायुमण्डल में व्याप्त दोहरा प्रदूषण मानव पर हावी होता जा रहा है।

रेडियोधर्मी प्रदूषण–वर्तमान वैज्ञानिक युग में परमाणु बम विस्फोट परीक्षणों से वायुमंडल में जो विस्फोट के द्वारा इलेक्ट्रॉन, न्युट्रॉन, अल्फा, बीटा किरणें आदि प्रवाहित होती हैं, जिनके कारण कभी-कभी जीन्स तक में परिवर्तन आ जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् इसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखा गया है।

ध्वनि प्रदूषण–विभिन्न प्रकार के परिवहन, कारखानों के सायरन, मशीन चलने से उत्पन्न शोर आदि के द्वारा ध्वनि प्रदूषण होता है। ध्वनि की तरंगें जीवधारियों की मानसशक्ति को प्रभावित करती हैं। अधिक तीव्र ध्वनि सुनने से रात में नींद नहीं आती है और कभी-कभी पागलपन का रोग पैदा कर देती है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या आज विश्व के सामने एक भयंकर समस्या बनकर उपस्थित है। यदि पर्यावरण को प्रदूषिण होने से रोका नहीं गया तो शीघ्र ही वर्तमान सृष्टि समाप्त हो जायेगी। पेड़-पौधे हानिकारक गैसों को ही नहीं, अपितु स्थलीय एवं ध्वनि-प्रदूषण को भी रोकते हैं और यह हमें साँस लेने के लिए पर्याप्त मात्रा में शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। अतः, बड़े पैमाने पर नये वन लगाने, भू-संरक्षण के उपाय करने और समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों में 'रक्षा कवच' लगाने की आवश्यकता है।

विश्व के कुछ विकसित देशों, जैसे–अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि में प्रदूषण रोकने के लिए महत्त्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं। कारखानों से निकलनेवाले धुएँ को रोकने के लिए चिमनियों में ऐसे यंत्र लगाये गये हैं जिनसे घातक गैसों और धुएँ को वहीं कार्बन के रूप में रोक लिया जाता है। बेकार रासायनिक पदार्थों को नदियों में बहाने के बदले अन्य तरीकों से नष्ट किया जाता है। वाहनों से निकलनेवाली गैसों पर नियंत्रण करने के लिए उनमें फ़िल्टर का उपयोग अनिवार्य कर दिया गया है। आणविक विस्फोट पर भी अन्तर्राष्टीय स्तर पर प्रतिबंध लगाने पर विचार विमर्श जारी है और साथ ही वैकल्पिक ऊर्जा की उपयोगिता की ओर अत्यधिक ध्यान दिया जा रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण आज मानव अस्तित्व के लिए जटिलतर चुनौती बन गया है। यदि इस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो 20-30 वर्षों में यह धरती तपती रेत के सागर में विलीन हो जायेगी। इसलिए विश्व के प्रत्येक नागरिक का यह परम कर्तव्य हो गया है कि प्रदूषण के बचाव कार्य में सहयोग दे और इस सृष्टि की रक्षा करें।

(iv) दीपावली

भूमिका– दीपावली हिन्दुओं का महत्वपूर्ण उत्सव है। यह कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि में मनाया जाता है। इस रात को घर-घर में दीपक जलाए जाते हैं। इसलिए उसे 'दीपावली' कहा गया। रात्रि के घनघोर अन्धेरे में दीपावली का जगमगाता हुआ प्रकाश अति सुन्दर दृश्य की रचना करता है।

मानने का कारण– दीवाली वर्षा-ऋतु की समाप्ति पर मनाई जाती है। धरती की कीचड़ और गन्दगी समाप्त हो जाती है। अतः लोग अपने घरों-दुकानों की पूरी सफाई करवाते हैं ताकि सीलन, कीड़े-मकोड़े और अन्य रोगाणु नष्ट हो जाएँ। दीवाली से पहले लोग रंग-रोगन करवाकर अपने भवनों को नया कर लेते हैं। दीप जलाने का भी शायद यही लक्ष्य रहा होगा कि वातावरण के सब रोगाणु नष्ट हो जाएँ।

दीवाली के साथ निम्नलिखित प्रसंग भी जुड़े हुए हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन श्री रामचन्द्र जी रावण का संहार करने के पश्चात् वापस अयोध्या लौटे थे। उनकी खुशी में लोगों ने घी के दीपक जलाए थे। भगवान् महावीर ने तथा स्वामी दयानन्द ने इस तिथि को निर्वाण प्राप्त किया था। इसलिए जैन सम्प्रदाय तथा आर्य समाज में भी इस दिन का विशेष महत्व है। सिक्खों के छठे गुरु हरगोविन्द सिंह जी भी इसी दिन कारावास से मुक्त हुए थे। इसलिए गुरुद्वारों की शोभा इस दिन दर्शनीय होती है। इसी दिन भगवान कृष्ण ने इन्द्र के क्रोध से ब्रज की जनता को बचाया था।

व्यापारियों का प्रिय उत्सव– व्यापारियों के लिए दीपावली उत्सव-शिरोमणि है। व्यापारी-वर्ग विशेष उत्साह से इस उत्सव को मनाता है। इस दिन व्यापारी की आकांक्षा भी करते हैं। घर-घर में लक्ष्मी का पूजन होता है। ऐसी मान्यता है कि उस रात लक्ष्मी घर में प्रवेश करती हैं। इस कारण लोग रात को अपने घर के दरवाजे खुले रखते हैं। हलवाई और आतिशबाजी की दुकानों पर इस दिन विशेष उत्साह होता है। बाजार मिठाई से लद जाते हैं। यह एक दिन ऐसा होता है, जब गरीब से अमीर तक, कंगाल से राजा तक सभी मिठाई का स्वाद प्राप्त करते हैं। लोग आतिशबाजी छोड़कर भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। गृहिणियाँ इस दिन कोई-न-कोई बर्तन खरीदना शकुन समझती हैं।

निष्कर्ष– दीवाली की रात को कई लोग खुलकर जुआ खेलते हैं। इस कुप्रथा को बन्द किया जाना चाहिए। कई बार जुएबाजी के कारण प्राणघातक झगड़े हो जाते हैं। आतिशबाजी पर भी व्यर्थ में करोड़ों-अरबों रुपयों खर्च हो जाता है। कई बार आतिशबाजी के कारण आगजनी की दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। इन विषयों पर पर्याप्त विचार होना चाहिए।

(v) प्राकृतिक संसाधन

प्राकृतिक संसाधनों के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है, और इन संसाधनों के कारण ही इस ग्रह पर जीवन का कोई भी रूप आराम से टिका हुआ है। प्राकृतिक संसाधन कुछ भी और सब कुछ है जो प्रकृति से प्राप्त होता है और हमारे द्वारा उपयोग किया जाता है, मौलिक हवा, पानी और सूरज की रोशनी से लेकर जीवाश्म ईंधन, खनिज, लकड़ी, आदि जैसे कार्बनिक तत्वों तक भी।

प्राकृतिक संसाधन जो जीवित जीवों से प्राप्त होते हैं या अंततः जीवित जीवों के कारण बनते हैं, जैविक तत्व कहलाते हैं, जैसे जंगल, पक्षी, जानवर, मछलियाँ या अन्य समुद्री जीव, जीवाश्म ईंधन (क्योंकि वे कार्बनिक पदार्थों के क्षय के कारण बनते हैं) आदि। प्राकृतिक संसाधन जो प्रकृति के निर्जीव तत्वों को संदर्भित करते हैं, अजैविक संसाधन कहलाते हैं। अजैविक संसाधनों के उदाहरण सूर्य का प्रकाश, हवा, ज्वार, मिट्टी, खनिज आदि हैं।

प्राकृतिक तत्व दुनिया भर में हर जगह मौजूद हैं लेकिन समान रूप से वितरित नहीं हैं। मनुष्य ने कुशल तरीके सीखे हैं जिससे वे अपने लाभ के लिए अपने क्षेत्र में मौजूद प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। भारत की तरह विभिन्न प्रकार की मिट्टी और आर्द्र मौसम ने कृषि के समृद्ध विकास की अनुमति दी है। समुद्र से घिरे देश के क्षेत्रों ने अंततः मछली पकड़ने में उन्नत कौशल विकसित किया।

हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कैसे करते हैं। इसके कुछ उदाहरण हैं। पीने के पानी का उपयोग और हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर का उत्पादन, पौधों की वृद्धि के लिए धूप आवश्यक है और हमें गर्मी और विटामिन भी प्रदान करते हैं। पौधे हमारे ऑक्सीजन और भोजन का प्राथमिक स्रोत हैं। कोयला है बिजली उत्पादन और वाहनों आदि के लिए ईंधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

व्यापार और वाणिज्य के साथ वैश्वीकरण आया और अब हम उन तरीकों को खोजने के लिए गतिशील रूप से विकसित हो रहे हैं जिनमें हम बेहतर सेवा के लिए उत्पाद बनाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के तरीकों को संशोधित कर सकते हैं। लेकिन हमें यह याद रखना होगा कि हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में सभी संसाधन असीमित रूप से मौजूद नहीं हैं। यदि हम इन संसाधनों की खपत के बारे में सावधान नहीं हैं, तो वे अंततः समाप्त हो जाएंगे, तो हमारे पास उनके बिना जीवित रहने का कोई विकल्प नहीं हो सकता है।

सौर, पवन, पनबिजली, भूतापीय और बायोमास जैसे संसाधनों को नवीकरणीय संसाधन कहा जाता है क्योंकि वे दुनिया में प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं और प्रकृति में स्व-पूर्ति कर रहे हैं। और जीवाश्म ईंधन, लोहा, मीठे पानी, कोयला, परमाणु तत्व आदि जैसे संसाधन जिन्हें बनने में लाखों साल लगे और अंततः नष्ट हो सकते हैं (पुनः उत्पन्न नहीं किए जा सकते) गैर-नवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं।

इसलिए, संसाधनों को संरक्षित करना आवश्यक है ताकि वे भविष्य में हमारे और हमारी आने वाली पीढ़ी के उपयोग और लाभ के लिए उपस्थित हो सकें। सभी को प्राकृतिक संसाधनों को जानने की जरूरत है क्योंकि हमारा अस्तित्व उन पर निर्भर करता है। हमें इन संसाधनों की अनुपस्थिति के खतरनाक प्रभाव के बारे में लोगों को शिक्षित करने और जागरूक करने की भी आवश्यकता है। हमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के तरीकों का प्रचार और अभ्यास करना चाहिए।

(vi) वसंत ऋतु

सभी ऋतुओं का अपना-अपना महत्त्व है और वे सभी हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं, पर इनमें श्रेष्ठ, मादक, सुन्दर और आकर्षक ऋतु है–वसंत ऋतुओं का राजा है। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने को ऋतुओं का राजा वसंत, ऋतुराज कुसुमाकर कहकर, इस ऋतु को महत्त्व प्रदान किया है। यह अपने सारे साज-बाज और शान-शौकत के साथ पृथ्वी पर अवतरित होता है। इसके आते ही चारों ओर आनन्द और उल्लास छा जाता है। चेहरे की सुस्ती मिट जाती है और तन का आलस्य भाग जाता है। वृक्षों में नये कोमल पत्ते आ जाते हैं और फलों से प्रकृति लद जाती है। सारा वातावरण मादक और सुगन्धित बन जाता है।

वसंत के आते ही शीत का भयंकर प्रकोप भाग जाता है। वातावरण समशीतोष्ण रहता है। न शीत की कठोरता, न ग्रीष्म का ताप। एक हल्का-हल्का गुलाबी जाड़ा पड़ता है, जिससे प्रत्येक प्राणों की नस-नस में प्रफुल्लता और उमंग की लहरें उठती हैं। वसंत की आगवानी पूरी प्रकृति करती है। संपूर्ण नवीन वेषभूषा धारण कर इसका उल्लासपूर्वक स्वागत करती है। मोर झूम-झूमकर नाचने लगते हैं, भ्रमरों का गुंजन होने लगता है। कोयल कू-कू करने लगती है। दूर-दूर तक फैला आम्रवन भूरी मंजरियों से लद जाता है और उसकी कच्ची-क्वाँरी सुगंध से समस्त वातावरण मादक हो उठता है, पक्षी कलरव करने लगते हैं, नदियाँ कल-कल कर गाना सुनाने लगती हैं। वस्तुतः वसंत के आगमन के साथ ही हमारे ठिठुरे अंगों में नयी स्फूर्ति उमड़ पड़ती है, आँखों में नयी चमक आ जाती है और गालों पर लालिमा दौड़ने लगती है। तन-मन दोनों रंग जाते हैं।

2. (i) प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' के निबंध 'अर्द्धनारीश्वर' से ली गयी है। निबंधकार दिनकर जी कहते हैं कि पुरुष पुरुषार्थ के लिए जाना जाता है तो स्त्री अपने स्त्रियोचित कोमलता के लिए। पुरुष में यदि स्त्रियजन्य कोमलता आ जाएगी तो वह निंदा का पात्र बनेगा। स्त्रियाँ यदि पुरुषों की तरह आक्रामक होंगी तो यह भी निन्दा का विषय हो जाता है।

आवश्यकता है कि पुरुष में भी कुछ नारीत्व के गुण रहें। जिस पुरुष में केवल कठोरता ही कठोरता रहेगी तो नारियों के लिए जीना भी मुश्किल हो जाएगा। पुरुषार्थ की मात्रा एक सीमा तक ही उचित कही जाएगी।

(ii) प्रस्तुत पंक्ति भगत सिंह लिखित लेख 'एक लेख एक पत्र' से उद्धृत है। इस पंक्ति के द्वारा क्रान्ति के अग्रदूत भगत सिंह कहना चाहते हैं कि-हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि यदि हम इस क्षेत्र में नहीं उतरते तो कोई भी

क्रांतिकारी कार्य नहीं होता। ऐसा सोचना भूल होगी। निःसंदेह हमारी भूमिका महत्वपूर्ण है पर हम सब मात्र अपने समय की आवश्यकता के उपज हैं।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियाँ 'अधिनायक' कविता के अंतिम पद हैं। इस कविता के कवि हैं रघुवीर सहाय।

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि सत्ताधारी वर्ग के जन प्रतिनिधियों की पहचान कराता है जो राजसी ठाट-बाट में जी रहे हैं। जन-गण-यानी गरीब-आम आदमियों यानी जनता पर उनका रोब-दाब है और जनता उन्हें अधिनायक मानकर मजबूरी में उनका गुणगान करती है।

(iv) प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के 'पद' से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ 'सूरदास' काव्य कृति से संकलित की गई हैं। नींद में सोए हुए बालक कृष्ण को जगाए जाने का रोचक वर्णन इस पद में है। कवि कहते हैं–हे ब्रजराज ! भोर हो रही है, जागिए-कमल के फूल खिल उठे हैं, कुमुद के पुष्पों ने अपनी पंखुड़ियों को समेट लिया है। भौरे लताओं में छिप से गये हैं। अर्थात् हे श्याम, अब जागिए, सवेरा हो गया है।

3. (i) सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,
ए० बी० कॉलेज, पटना

विषय–महाविद्यालय परित्याग प्रमाण-पत्र प्राप्ति के संदर्भ में।

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मैं सत्र 2024 इन्टरमीडिएट, विज्ञान का छात्र हूँ। मैं वर्ष 2024 इन्टरमीडिएट विज्ञान संकाय में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ हूँ।

मुझे स्नातक विज्ञान प्रथम खंड में नामांकन हेतु महाविद्यालय परित्याग प्रमाण-पत्र की आवश्यकता है। मैं महाविद्यालय के सभी शुल्क जमा कर चुका हूँ। अतः C.C.L. निर्गत करने की अनुमति प्रदान की जाए।

धन्यवाद।

प्रार्थी
राजेश कुमार
पिता–श्री नवल प्रसाद सिंह
सत्र–2023-24
वर्ग–XII, क्रमांक–112

(ii) पटना

राजेन्द्र नगर, 800020
14 मार्च, 2023

प्रिय मित्र अनूप,

नमस्कार।

तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि घर पर सभी सानंद हैं। मैं सकुशल हूँ और बोर्ड परीक्षा की तैयारी में जी-जान से जुटा हूँ।

प्रिय मित्र प्राक् परीक्षा में मुझे अंग्रेजी को छोड़ सभी विषयों में बहुत अच्छे अंक प्राप्त हुए हैं। फिर भी मैं और अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए परिश्रम कर रहा हूँ। अंग्रेजी सुधारने में शिक्षक मेरी खूब मदद कर रहे हैं। वे संध्या के समय मुझे बुलाकर अंग्रेजी सुधारने में लगे हुए हैं। वे व्याकरण की बारीकियाँ समझाते हैं। इस अवधि में मेरी भाषा में सुधार हुआ है और आशा करता हूँ कि मैं अंग्रेजी में भी अबकी सबसे बाजी मार लूँगा। इस प्रकार आशा है कि बोर्ड परीक्षा में 96% अंक कम से कम प्राप्त होगा। मैं चाहता हूँ कि मैं सबकी अपेक्षाओं के अनुरूप अपने को साबित करूँ।

चाचाजी एवं चाची जी को मेरा सादर प्रणाम और मोनिका को बहुत-बहुत प्यार।

तुम्हारा मित्र
उत्सव दिवाकर

4. (i) जीवन बड़ा अद्भुत है, असीम और अगाध है। यह अनन्त रहस्यों से युक्त एक विशाल साम्राज्य है जिसमें मानव कर्म करते हैं।

जीवन का परिचय देते हुए लेखक का मानना है कि इसमें अनेक विविधताओं, अनन्ताओं के साथ रहस्मयताएँ भी विद्यमान हैं। यह कितना विलक्षण है। प्रकृति में उपस्थित पक्षीगण, फूल, वृक्ष, सरिताओं और आकाश के तारों में भी लेखक को जीवन का रूप दिखाई पड़ता है। लेखक ने जीवन का परिचय सर्वरूपों में दिया है।

(ii) दलविहीन लोकतंत्र सर्वोदय विचार का मुख्य राजनीतिक सिद्धांत है और ग्राम सभाओं के आधार दलविहीन प्रतिनिधित्व स्थापित हो। दलविहीन लोकतंत्र तो मार्क्सवाद तथा लेनिनवाद के मूल उद्देश्यों में से हैं मार्क्सवाद के अनुसार समाज जैसे-जैसे साम्यवाद की ओर बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे राज्य-स्टेट का क्षय होता जाएगा और अंत में एक स्टेटलेस सोसाइटी कायम होगी। वह समाज अवश्य ही लोकतांत्रिक होगी, बल्कि उसी समाज में लोकतंत्र का सच्चा स्वरूप प्रकट होगा और वह लोकतंत्र निश्चय ही दलविहीन होगा।

(iii) रामधारी सिंह दिनकर का निधन 24 अप्रैल, 1974 को हुआ था। उनकी मृत्यु 65 वर्ष की उम्र में हुई थी। अपने अंतिम दिनों वे अवसाद से पीड़ित थे। वे तिरूपति बालाजी गये थे और वहाँ उन्होंने मृत्यु की कामना की थी और अपनी कविता 'रश्मिरथी' का पाठ ईश्वर के सम्मुख कर अपनी मृत्यु की कामना की थी। उन्होंने मद्रास में आखिरी साँस ली थी।

(iv) अज्ञेय की 'रोज' शीर्षक कहानी दाम्पत्य जीवन की कहानी है। सरकारी क्वार्टरों की एकरस उदासी की कहानी है। कहानी की नायिका मालती है जो अपने डॉक्टर पिता के साथ सरकारी क्वार्टर में रहती है। जहाँ बिजली की व्यवस्था ऐसा कि चौबीसों घंटों पानी भी नहीं मिल पाता है। घर में दो पलंग है जिसपर कायदे का भी नहीं है। यह बात मालती और लेखक के बीच संवाद से स्पष्ट होती है–

ऐसे ही आये हो ? "नहीं कुली पीछे आ रहा है, सामान लेकर। मैंने सोचा विस्तार ले चलूँ।" अच्छा किया, यहाँ तो बस–

मालती के घर का वातावरण ऊब और उदासी के बीच ऐसा लग रहा है, मानो उस पर किसी शाम की छाया मँडरा रही हो। वातावरण बोझिल, अकथ्य एवं प्रकम्पमय बना हुआ रहता है।

(v) चम्पारण क्षेत्र में बाढ़ की विभिषिका से एक विशाल क्षेत्र प्रभावित है। गंडक, मसान, सिकराना, पड़ई इत्यादि इस क्षेत्र में संतत् प्रवाहित होती है। अपने आसपास हरे-भरे वृक्षों का नयनाभिराम दृश्य, मखमली हरित-कालीन सी उर्वरा भूमि को निरंतर अपने जल से सिंचित करती है। मनुष्य, पशु, पक्षी आदि समस्त प्राणियों की प्यास भी इनके जल से बुझती है, तभी तो लेखक ने उन्हें सम्बोधित किया है। "ओ सदानीरा"।

किन्तु पिछले छह-सात सौ साल से चंपारण से गंगा तक फैले "महावन" (विस्तृत वन क्षेत्र) के वृक्षों को काटा जाना बदस्तूर जाती है। इसके परिणामस्वरूप नदियों के तटों पर पानी का कटाव निरंतर चलता रहता है। यदि इन् नदियों में अपना धैर्य खो दिया तो बाढ़ की प्रचंडता स्वाभाविक है। अतः वर्षा ऋतु में हिमालय की ढलान से बाहर आया जल तथा वर्षा का जल बाढ़ की प्रचंडता का कारण बन जाता है। इस त्रासदी को झेलने के लिए यहाँ निवास करने वाले अभिशप्त हैं।

(vi) छत्रसाल की तीक्ष्ण धारवाली चमचमाती तलवार जब म्यान से निकलती थी तो वह प्रलय सूर्य की तेज किरण के सामने लगती थी। वह अरिदल के गज-झुंडों को उसी प्रकार विदीर्ण कर देती थी जिस प्रकार रवि-किरणें सघन अंधकार को फाड़ देती हैं। तेज गति से चलनेवाली वह जलवार शत्रुओं के गले में नागिन-सी लपककर लिपट जाती थी और देखते ही देखते उनके सिरों को धड़ों से अलग कर देती थी। उनके इस सिरच्छेदन के कार्य से ऐसा लगता था मानो वह भगवान रूद्र को मुंडमाल अर्पित कर उन्हें खुश करना चाहती हो। छत्रसाल की तलवार ऐसी है।

(vii) बंधी हुई मुट्ठियों के लख्य के माध्यम से जनता की ताकत को एहसास कराना चाहता है जो किसी भी विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल कर सकती हैं। यह इतनी ताकतवर होती है कि जनशोषक शत्रु को सत्ताच्यूत कर देती है। मुट्ठियों की ताकत सामान्य जनता की ताकत है। यदि इस ताकत के साथ कोई खिलबाड़ करे तो उसकी मिट्टी पलीद हो जाती है। चाहे वह कितना भी बड़ा जन-शोषक क्यों न हो, जब तक ताकत क्रुद्ध होती है तो अपनी ज्वाला में जलाकर राख कर देती है। अतः कवि बंधी हुई मुट्ठियों के माध्यम से जन-शोषक को इनसे न टकराने की नसीहत देता है।

(viii) जिस प्रकार हाथी सिंह से ज्यादा शक्तिशाली, भारी भरकम वजनी होते हुए भी सिंह द्वारा आखिर मारा जाता है उसी प्रकार हमारे शिवाजी सिंह के समान हैं जो हमेशा दुश्मनों को मार गिराते हैं। यहाँ शक्ति का उतना महत्त्व नहीं है जितना कि सिंह को चुस्ती-फुर्ती का, उसके मस्तिष्क का। अत: शिवराज भी इसी चुस्ती-फुर्ती से दुश्मनों पर विजय प्राप्त करते है इसलिए कवि ने शिवराज की तुलना मृगराज से की है।

(ix) कबीरदास पाखंड के विरोधी थे। षडदर्शन वर्णाश्रम व्यवस्था का पोषक धर्म था। कबीर ने षड्दर्शन की बुराइयों की तीखी आलोचना की और इसके विचारों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। अर्थात् कानों से सुनकर ग्रहण नहीं किया, बल्कि उसके पाखंड की धज्जी-धज्जी उड़ा दी। उन्होंने जनमानस का ध्यान भी इसकी बुराइयों की ओर आकृष्ट किया और उसके विचारों को मानने का विरोध किया।

(x) प्रस्तुत पंक्ति तुलसीदास के 'पद' से उद्धृत है जो 'विनयपत्रिका' काव्य कृति से ली गयी है। उपर्युक्त पंक्ति में 'अंब' का संबोधन माँ सीता के लिए किया गया है।

5. (i) डायरी दैनिक वृत्त की पुस्तक है जिसे दैनदिनी भी कहा जाता है। इसमें व्यक्ति या लेखक अपने मन की बातों, विचारों को खुलकर लिखता है।

लेखक मलयज (भरत जी श्रीवास्तव) ने पाठ 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' में कहा है कि सुरक्षा डायरी में नहीं बल्कि सूरज के पूर्ण प्रकाश में है। पलायन में नहीं बल्कि संघर्ष में है।

(ii) गाँधीजी शिक्षा का मतलब सुसंस्कृत बनाने और निष्कलुष चरित्र निर्माण समझते थे। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आचार्य पद्धति के समर्थक थे अर्थात् बच्चे सुसंस्कृत और निष्कलुष चरित्र वाले व्यक्तियों के सान्निध्य से ज्ञान प्राप्त करें। अक्षर ज्ञान को वे इस उद्देश्य की प्राप्ति में विधेय मात्र मानते थे।

वर्तमान शिक्षा पद्धति को वे खौफनाक और हेय मानते थे क्योंकि शिक्षा का मतलब है–बौद्धिक और चारित्रिक विकास, लेकिन यह पद्धति उसे कुंठित करती है। इस पद्धति में बच्चों को दस्तावेज रटाया जाता है ताकि आगे चलकर वे क्लर्क का काम कर सकें, उनका सर्वांगीण विकास से कोई सरोकर नहीं है।

वे जीविका के लिए नये साधन सीखने के इच्छुक बच्चों के लिए औद्योगिक शिक्षा के पक्षधर थे। तात्पर्य यह न था कि हमारी परंपरागत व्यवसाय में खोट है वरन् यह कि हम ज्ञान प्राप्त कर उसका उपयोग अपने पेशे और जीवन को परिष्कृत करें।

(iii) पुंडलीक जी भितिरहरवा आश्रम विद्यालय के शिक्षक थे। गाँधीजी ने उन्हें बेलगाँव से सन् 17 में बुलाया था शिक्षा देने और ग्रामीणों का भयारोहण के लिए।

पुंडलीक जी, गाँधीजी के आदर्शों को सच्चे दिल से मानने वाले बड़े ही निर्भय पुरुष थे। पहले एक कायदा था कि साहब जब आएँ तो गृहपति उसके घोड़े की लगाम पकड़े। एक दिन एमन साहब, जो उस समय बड़े अत्याचारी थे आए तो पुंडलीकजी ने कहा, "नहीं, उसे आना है तो तेरी कक्षा में आए मैं लगाम पकड़ने नहीं जाऊँगा।" पुंडलीक जी ने गाँधीजी से सीखी निर्भीकता गाँव वालों को दी। यही निर्भीकता चंपारण अभियान की सबसे बड़ी देन है।

(iv) घनघोर कोलाहल, अशांति और कलह के बीच हृदय की बात का कार्य मस्तिष्क को शांति पहुँचाना उसे आराम देना है। मस्तिष्क जब विचारों के कोलाहल से घिर जाता है जो हृदय की बात उसे आराम देती है। हृदय कोमल भावनाओं का प्रतीक है जो मस्तिष्क को विचारों के कोलाहल से दूर करता है।

(v) महाकवि भूषण रीतिकाल के एक प्रमुख कवि हैं, किन्तु इन्होंने रीति-निरूपण में शृंगारिक कविताओं का सृजन किया। उन्होंने अलंकारिकता का प्रयोग अपनी कविताओं में अत्यधिक किया है।

अलंकार निरूपक आचार्यों में मतिराम, गोप, रघुनाथ, दलपति आदि और भी कुछ कवि आते हैं।

इस प्रकार भूषण शृंगार रस के आलंबन नायक-नायिकाओं के भेदोपभेदों के निरूपक रीति काव्य परंपरा के कवि हैं। अलंकार निरूपक रीति कवि के रूप में भूषण को ख्याति प्राप्त है। महाकवि भूषण का आर्विभाव रीतिकाल में हुआ। उस समय की समस्त कविताओं का विषय था-नख-शिखा वर्णन और नायिका भेद। अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करना और वाहवाही लूटना उनकी कविता का उद्देश्य था। अत: तब कविता स्वाभाविक उद्गार के रूप में नहीं होती थी वरन धनोपार्जन के साधन के रूप में थी। ऐसे ही समय में महाकवि भूषण का आविर्भाव हुआ। परन्तु उनका उद्देश्य कुछ और था। अतएव देश की करूण पुकार से उनका अंतर्मन गुंजरित हुआ। फलस्वरूप उनके काव्य में शृंगार की धारा प्रवाहित नहीं हुई वरन वीर रस की धारा फूट पड़ी। ऐसी परिस्थिति में कहा जायगा कि वे तत्कालीन काव्यधारा के विरुद्ध प्रतीत होते हैं। परन्तु उनकी कविता कवि-कीर्ति संबंधी एक अविचल सत्य का दृष्टांत है।

(vi) कवि की स्मृति में "घर का चौखट" जीवन की ताजगी से लबरेज है। उसे चौखट इतना जीवित इसलिए प्रतीत होता है कि इस चौखट की सीमा पर सदैव चहल-पहल रहती है। कवि अतीत की अपनी स्मृति के झरोखे से इस हलचल को स्पष्ट रूप से देखता है अर्थात् ऐसा अनुभव करता है, क्योंकि उस चौखट पर बुजुर्गों को घर के अन्दर अपने आने की सूचना के लिए खाँसना पड़ता था तथा उनकी खड़ाऊँ की "खट-पट" की स्वर-लहरी सुनाई पड़ती थी। इसके अतिरिक्त बिना किसी का नाम पुकारे अन्दर आने की सूचना हेतु पुकारना पड़ता था। चौखट के बगल में गेरू से रंगी हुई दीवार थी। ग्वाल दादा (दूध देने वाले) प्रतिदिन आकर दूध की आपूर्ति करते थे। दूध की मात्रा का विवरण दूध से सने अपने अंगूठे की उस दीवार पर छाप द्वारा करते थे, जिनकी गिनती महीने के अंत में दूध का हिसाब करने के लिए की जाती थी। यह गाँवों की पुरानी परिपाटी थी।

उपरोक्त वर्णित उन समस्त औपचारिकताओं के बीच "घर की चौखट" सदैव जाग्रत रहती थी, जीवन्तता का अहसास दिलाती थी।

6. **(i) शीर्षक : सच्चा ईश्वर सेवक**

सर्वशक्तिमान ईश्वर को क्षुद्र मानव प्रयासों से नहीं अपितु अविचल श्रद्धा से ही पाया जा सकता है। ईश्वर साधक का जीवन ही सफल होता है।

[शब्द संख्या–25]

(ii) शीर्षक : प्रत्युपन्नमति

आज के भीषण जीवन संघर्ष के युग में जो प्रत्युपन्नमति होगा, दृढ़निश्चयी और निर्णय कर काम पर डटे रहेगा, वही सफल हो सकता है।

[शब्द संख्या–24]